IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, February 2023

कालिदास के अभिव्यक्ति सौंदर्यः 'अभिज्ञानशाकुन्तल' में प्रकृति और सौन्दर्य

तारापद मिश्र[1] and डॉ. सुषमा रानी[2]
[1]शोधार्थी, संस्कृत विभाग
[2]सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
ओ. पी. जे. एस. विश्वविद्यालय, राजस्थान

भूमिका

शंकर सत्यम्, शिवं सुन्दरं के मूर्त रूप हैं। अखिल ब्रह्माण्ड का सत्य तत्त्व वैज्ञानिक के अध्ययन का विषय हैं, शिव तत्त्व धर्म है तथा सुन्दर तत्त्व काव्य तथा कला का विषय हैं। काव्य क्षेत्र में समस्त कलायें नाटक में ही एकत्रीभूत होती हैं ।' कलाओं को हम जीवन से पृथक नहीं कर सकते । जीवन स्वयं एक कला है धनंजय के अनुसार जीवन की अवस्थाओं का अनुकरण ही नाटक हैं। 2 अतः समस्त कलायें नाटक में समाहित हो जाती हैं। नाटक का एक नाम 'रूप' भी हैं। रूप सौन्दर्य का आधार तथा नेत्र का विषय हैं। 3 सौन्दर्य भी नेत्र का विषय है अतः काव्यगत सैन्दर्य बोध का पूर्ण रूप हमें नाटक में ही प्राप्त हो सकता हैं। सौन्दर्य बोध पर विचार करने से पहले सौन्दर्य शब्द पर विचार कर लेना आवश्यकता है।

सौन्दर्य शब्दः व्युत्पत्ति

सौन्दर्य शब्द 'सुन्दर' विशेषण शब्द में ष्यञ प्रत्यय जोड कर बना है। सौन्दर्य के लिये सुन्दर शब्द की आवश्यकता है । 'सुन्दर' शब्द की स्पष्ट व्युत्पत्ति प्राप्त नहीं होती अतः अनुमान का सहारा लेना पड़ता है। 'संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी' में सुन्दर शब्द की सम्भावना सु-नर से की गई है ।[4]

सुन्द धातु (प्रकाश अथवा चमक के अर्थ में) 5 तथा 'रा' धातु (लाने के अर्थ में) से भी सुन्दर शब्द का सम्बन्ध हो सकता है । क्योंकि सौन्दर्य तथा प्रकाश का सहज सम्बन्ध है । वाचस्पत्य कोश में सुन्दर शब्द को 'सु' उपसर्गपूर्वक 'उन्द' धातु में अरन् (अरच्) कतृवाचक प्रत्यय जोड़ कर सिद्ध किया गया है। सु (भली-भाँति) उन्द (गीला करना) में अरन् (अरच्) प्रत्यय जोड़ कर पूर्ण अर्थ हो गया, भली भाँति आर्द्र या सरस करनेवाला ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सौन्दर्य शब्द की व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में विविध मत है, किन्तु करने, सरस करने, श्रध्धापूरण करने तथा हृदय की दूरितवृति को नष्ट करने की स्वाभाविक आन्तरिक तथा बाह्य शक्ति होती है।

सौन्दर्य का क्षेत्र

सौन्दर्य के आधार रूप में मुख्यतः तीन विषय हमारे सम्मुख आते हैं -

१. प्रकृति,

२. मानव तथा

३. ईश्वर

प्रकृति सौन्दर्य

मानव प्रकृति से जन्मा है, प्रकृति में पला है तथा प्रकृति में ही विलीन होता आया है। अतः मानव तथा प्रकृति का अभिन्न सम्बन्ध है। यदि सर्व प्रथम किसी ने मानव को कुछ दिया है तो वह प्रकृति के ही वरद हस्त थे, यही कारण है कि साहित्य के आदि रूप वैदिक साहित्य में प्रकृति का वर्णन देवता के रूप में किया है। प्रकृति सौन्दर्य का वर्णन उद्दीपन रूप में प्राचीन काल से होता है । चन्द्र ज्योत्सना और मलय- समीर से राग रंग में और भी मधुरता आ जाती है।

मानव सौन्दर्य

सौन्दर्य के सन्दर्भ में प्रायः देखा जाता है कि पक्षियों में मादा पक्षी से सुन्दर नर पक्षी होते है जैसे मोर, तोता, तथा मुर्गा आदि । पशुओं के नर मादा के रूप में कुछ विशेष अंतर नहीं होता। मानव क्षेत्र में दोनों के सौन्दर्य परस्पर एक दूसरे को आकर्षित करते हैं परन्तु सामान्यतया नारी को आकर्षण का केन्द्र तथा सुन्दरी माना जाता है।

मानव की प्रत्येक अवस्था का सौन्दर्य पृथक-पृथक होता है। अवस्थाओं के आधार पर मानव सौन्दर्य को तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं- शैशवावस्था, युवावस्था, तथा वृद्धावस्था । शैशव के उपरान्त युवावस्था के सौन्दर्य पर विचार करना होगा। युवावस्था नारी-पुरुष दोनों के सौन्दर्य तथा एक-दूसरे के प्रति आकर्षण का सर्वोत्कृष्ट समय है।

नारी सौन्दर्य

नारी सौन्दर्य को भी सामान्य तथा विशिष्ट दो भागो में विभाजित क सकते हैं। सामान्य नारी में अविवाहित कन्या तथा सामान्य स्त्रियों का सौन्दर्य देखा जा सकता हैं। नारी सौन्दर्य में लज्जा तथा सुशीलता का बहुत बड़ा हाथ है उसके बिना मौन्दर्य व्यर्थ है। नारी सौन्दर्य का नख-शिख वर्णन जायसी, बिहारी आदि कवियों की अमर देन है।

पुरुष- सौन्दर्य

पुरुषसौन्दर्य को भी दो भागों में विभाजित कर सकते हैं- सामान्य तथा विशिष्ट । सामान्य पुरुष के सौन्दर्य के बिना किसी सम्बन्ध तथा प्रयोजन में किसी का भी मन आकृष्ट हो उठता है, परन्तु विशिष्टता वहाँ आ जाती है जब किसी प्रकार का सम्बन्ध स्थापित हो जाये ।

ईश्वर सौन्दर्य

ईश्वर निराकार तथा अविभाज्य है परन्तु प्राप्त साहित्य की दृष्टि से ईश्वर के सौन्दर्य को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं- सगुण तथा निर्गुण ब्रह्म । चक्षु का विषय रूप हैं, रूप में ही सौन्दर्य हैं।

सगुण ब्रह्म

जहाँ रूप हैं वहाँ विभिन्नता भी निश्चित है अतः इस सगुण ब्रह्म के भी अनेक रूप हैं, जिन्हें हम उपासकों के आधार पर तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं- वैष्णव, शैव तथा शक्ति ।

निर्गुण ब्रह्म

निर्गुण ब्रह्म को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है- भक्तिकाल की ज्ञानाश्रयी शाखा, प्रेमाश्रयी शाखा तथा आधुनिक काल का रहस्यवाद। विभिन्न साहित्यिक कृतियों में सौन्दर्य विभिन्न रूपों में प्रदर्शित होता है जैसे कालिदास की रचनाओं में उपमा, भारवि में अर्थगौरव तथा दण्डी में पदलालित्य अपनी निजी विशेषता रखता है ।९ साहित्य की प्रायः सभी विधाओं में सौन्दर्य निहित है, इसमें काई सन्देह नहीं । यह सौन्दर्य अनायास ही रचना का प्राण बन जाता है और रचना को उत्कृष्ट धरातल पर अवस्थित कर देता है।

कालिदास के नाटकों में सौन्दर्य

कालिदास सौन्दर्य के द्रष्टा और स्वष्टा दोनों ही है। उन्होंने जो कुछ देखा वह सुन्दर था और जो दिखाया वह उससे भी अदिक सुन्दर हुआ, इसीलिये उनकी रचनाओं में सौन्दर्यपूर्ण रूपेण समाविष्ट है। उनका सौन्दर्य बोध पारस की क्षमता रखता है, जिस विषय को उन्होंने छू दिया वही कंचन बन गया। सौन्दर्य क्षेत्र में कहीं भी अपूर्णता नहीं दिखाई देती है। मानव, समाज एवं प्रकृति सभी उनकी सौन्दर्यमयी द्रष्टिसे संजोये गये है।

कालिदास की सौन्दर्य संचेतना ऐतिहासिक व पौराणिक सत्य को भी बदल देने की क्षमता रखती है । 10 कालिदास की कुछ मान्यतायें पाश्चात्य सिद्धान्तों से भी साम्य रखती है। सौन्दर्यनाभूति के लिये कालिदास ने विकलता का भी प्रश्न उठाया है। उनका विश्वास है कि सौन्दर्यानुभूति में सर्वदा आलम्बन के प्रत्यक्ष ।।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, February 2023

अथवापरोक्ष 12 रहने पर विकलता का अंश विद्यमान रहता है। कालिदास की एक और मान्यता पाश्चात्य वस्तुनिष्ठ सौन्दर्य शास्त्रियों से भी साम्य रखती है। सौन्दर्य सदा मनोरम्य होता है उसे किसी प्रसाधन की आवश्यकता नहीं होती। [13]

कालिदास के सौन्दर्य बोध का मूलाधार उनका जीवन प्रेम है। यह जीवन मनुष्य, पशु और वनस्पति सर्वत्र है। इसका यह अर्थ नहीं कि वे विश्व में किसी अगोचर चेतना के दर्शन करते हैं उनके लिये यह जीवन घोर गोचर है। वह इन्द्रिय बोध से अभिन्न है, उससे परे नहीं। विलास और वैभव का यह कवि धरती के इतना निकट है जितना कोई कवि नहीं हुआ। [14]

कालिदास के नाटकों में सौन्दर्य बोध के विविध आयाम

सृष्टि के अंग प्रत्यंग में कवि सौन्दर्य के दर्शन करता है। वह व्यष्टि और समष्टि में व्याप्त सौन्दर्य देखता है। मानव, समाज, प्रकृति तथा आध्यात्मिक ईश्वरीय सत्ता एवं साहित्य सभी में सौन्दर्य निर्हित है।

मानव

सर्व प्रथम मानव में सौन्दर्य बोध की दृष्टि से हम कालिदास के नाटकों के पात्रों का अवलोकन करेंगे बाह्य तथा आंतरिक द्रष्टिकोण से मानव सौन्दर्य को शारीरिक तथा चारित्रिक दोनों रूपों में देखा जा सकता है। सर्वप्रथम इन नाटकों में नारी पात्रों की विवेचना करेंगे।

नारी

कालिदास के तीनों नाटकों की नायिकाएँ अत्यंत सुन्दर और युवा हैं। कवि ने अक्सर रूप की नई सीख का वर्णन किया है। हालाँकि आनंद नहीं आया, कवि को सहज सौंदर्य और हर स्थिति में सौंदर्य की कल्पना में विशेष रुचि है। मालविका के लिए 'बव्यजसुंदरी' और शकुंतला के लिए 'इयमदिक मनोजनवलकेनापि तन्वी' शब्द सहज सौंदर्य का पोषक है।

नारी सौन्दर्य वर्णन के लिये प्रायः प्रकृति से ही उपमान लिये गये है। सहज सौन्दर्य को प्रधानता देते हुए भी कवि ने वस्त्र, आभूषण, अनुलेपन आदि प्रसाधन पर ध्यान रखा है। यहाँ तक की प्रसाधन के द्रश्य रंगमंच पर भी प्रस्तुत किये गये हैं। [10]

शकुन्तला के चारित्रिक सौन्दर्य के विषय में रमाशंकर तिवारी जी के विचार हैं- 'शकुन्तला नाटक की नायिका है, और उसके शील निरूपण में कालिदास ने अपनी कला की समस्त शक्ति एवं गरिमा व्यय कर दी। जिस सजगता से कवि ने उसके रूप सौन्दर्य को विवृत करने का उद्योग किया है, उसी सावधानी एवं नैपुण्य से

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, February 2023

उसने शील के सौरभ को भी अनावृत करने का प्रयास किया है। 17 कालिदास की सौन्दर्य संचेतना का चरम उतकृष्ट शकुन्तला में ही प्राप्त होता है।

पुरुष सौन्दर्य

जिस प्रकार कालिदास ने नारी के कोमल शरीर के सौन्दर्य का वर्णन किया है उसी प्रकार उन्होंने पुरुष के व्यायाम से पुष्ट, कठोर, द्रढ एवं उर्जस्वल शरीर के सौन्दर् को भी वर्णन किया है।

अनवरत धनुर्ध्यास्फालनक्रूरपूर्वम्
रविकिरण सहिष्णु स्वेदलेशैरभिन्नम्।
अपरितमपि गात्रं व्यायतत्त्वादलक्ष्यं
गिरचर इव नागः प्राणसारं बिभर्ति ।। 4 ।। [18]

पुरुष के आचरण में दाक्षिण्य उसका विशेष सौन्दर्य है, कालिदास ने तीनों नाटकों के नायक दाक्षिण्य से परिपूर्ण है। पुरुष के पिता रुप की भव्यता को कालिदास ने सदैव महत्व दिया है। कण्व नें शकुन्तला का पालन पोषण किया था उसका पिता रूप नाटक से अद्वतीय शोभा धारण करता हे। पुरुरवा तथा दुष्यन्त के पिता के रुप भी दर्शनीय है। कालिदास ने पुरुषोचित समस्त रुप तथा आचरण के सौन्दर्य को दुष्यन्त में समाहित किया है। प्रियंवदा के इस कथन में दुष्यन्त के रुप एवं शील की युगपद व्यंजना हुई है-'अनसूये को न खलु एष चतुरगंभीराकृतिर्मधुरं प्रिय मालपन्प्रभानिव लक्ष्यते । 19 दुष्यन्त का केवल प्रजा पर ही नही प्रकृति पर भी पूर्ण प्रभाव है। [20]

समाज सौन्दर्य

कालिदास ने अपने समय की सामाजिक परिस्थितियोम का पूर्ण यथार्थ चित्रण किया है। ब्राह्मण भाग, यज्ञ, अध्ययन-अध्यापन आदि कार्यों में रत रहतें थें। सामाजिक जीवन की उन्नति के लिये कालिदास 'वर्णाश्रम' धर्म के समर्थक हैं। वर्णों एवं आश्रमों की व्यवस्था हमारी संस्कृति में समाज को सुचारु रुप से चलाने के लिये की गई थी । 'शाकुन्तलम्' में वैश्यो को समुद्र व्यापारी कहा गया है, जो राष्ट्र की सम्पति बढ़ाने के लिये समुद्रों पर भ्रमण कर अन्य देशों से वाणिज्य व्यवसाय करते थे। शूद्रों को भी अपने ढंग से राष्ट्र सेवा करते दिखाया गया है। सामाजिक मान्यताओं को कालिदास ने बड़े भव्य ढंग से प्रस्तुत किया है यथा पुत्र प्राप्ति पर माता की प्रसन्नता का उल्लेख है। 'पुत्रोत्सवे माद्यपि का न हर्षति '12' 'भरत तथा आयुष की प्राप्ति की प्रसन्नता नाटकों में दर्शनीय है।

शिक्षा के सम्बन्ध में कालिदास के अपने विचार हैं। शिक्षक वही श्रेष्ठ है जिसने विद्यातथा शिक्षण की योग्यता दोनों हैं। 22 सच्ची शिक्षा की कसौटी यह है कि जैसे अग्नि में डालने से सोना काला नहीं पड़ता वैसे ही परीक्षा काल में शिक्षा मंद नहीं होती ।[23]

प्रकृति सौन्दर्य

मानव और प्रकृति में जीवन विकास की रहस्यमय किया कालिदास को समान रूप से आकर्षित करती है। जीवन का जो उभार प्रकृति दिखाई पड़ता है वह मानव मात्र में यौवन बनकर झलकता है। जो पवन भरी बालों से झुके हुए धान के पौधों को हिलाता है वहीं नवयुवकों के हृदय चंचल करता है। 24 पृथ्वी जैसे अपने गर्भ में बीज छिपायें रहती है वैसे ही अग्निवर्ण की रानी अपने गर्भ से नया जीवन छिपायें को रहती हैं। जिस प्रकार कण्व शकुन्तला को दुष्यन्त को सौंप रहें हैं उसी प्रकार वन ज्योत्सना को भी वृक्ष का सहारा पा लेने पर प्रसन्न हैं।

कालिदास द्वारा वर्णित प्रकृति मूक, जड़ तथा निष्प्राण नहीं है वरन् मानव के समान उसमें सुख-दुःख की संवेदना के भाव भी दीख पड़ते हैं। पतिगृहको जाती शकुन्तला को विदाई के लिये प्रकृति कोयल की वाणी में अनुमति प्रदान करती है, वन देवियां शकुन्तला के आभूषण तथा महावर आदि प्रदान करती हैं। शकुन्तला के वियोग में हिरनियां दर्भ कवल उगल देती है। मोर नाचना छोड़ देते हैं और लताये पीले पत्तों के रूप में आँसू बहाती है। विरहग्रस्त प्रेम को तो प्रकृति अवर्णनीय सान्तवना एवं सन्तोष प्रदान करता है। मलयानिल अग्निमित्र को सान्तवना प्रदान करता है-

'आमतानां श्रवण सुभगे कूजिते कोकिलानां
सानुक्रोशं मनसिज रूजः सह्यतां पृच्छतेव ।
अंगे चूत प्रसवसुरमिर्दक्षिणा मारूतो मे
सान्द्रास्पर्श करतल इव व्यापृतो माधवेन ।। '[25]

कालिदास के प्रधान नाटक शाकुन्तल की नायिका शकुन्तला निसर्ग कन्या है जिसकी सर्वप्रथम गोद प्रकृति है फिर कण्व मुनि ।

कालिदास के नाटको में कलागत एवं भावगत सौन्दर्य

१ कलागत सौन्दर्य

कालिदास की कला की सबसे बड़ी विशेषत्ता यह है की वातावरण की सृष्टि करके वे थोडे से शब्दों में बहुत कुछ व्यक्त कर देते हैं। वह थोड़ा कह कर शेष की अनुमति के लिये अपने पाठकोम को छोड़ देते है। कला के अन्तर्गत भाषा, शैली, छन्द, अलंकार, व्यजंना, रीति तथा ध्वनि सब कुछ सन्निहित है।

२ भावगत सौन्दर्य

भावों के यथातथ्य प्रदर्शन में महाकवि सिद्धहस्तहैं। महात्मा कण्व के आश्रम में मुनिकन्या शकुन्तला से प्रथम साक्षात्कार होने के सुअवसर पर महाराज दुष्यन्त उनके कमनीय रूपं एवं अनवद्य सौन्दर्य के विषय में अपने जिज्ञासा, चिन्ता तथा प्रेम मिश्रित भव प्रकट करते हैं-

'अनात्रातं पुण्यं किसलयमलूने कररूहै,
अनाविद्धं रत्रं मधु नवमनास्वादितरराम्।
अखण्ड पुण्यानां फलमिव च तद्रुपमनवचं
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।।10।।

इसी प्रकार विदूषक को अन्तःपुर की स्त्रियों के आगे मुनिकन्या पर राजा का रीझना, पिण्ड खजूरी से ऊबे हुए की इमली खाने के इच्छा सद्रश ही प्रतीत होता हैं। इसमें विदूषक के मन की भावना विल्कुल ज्यों की त्यों उतर आई है।

शकुन्तला का चित्र बनाते समय दुष्यन्त के चित्त में जो भाव उमड़े उनके कारण जो आँसू और पसीना गिरा उनसे चित्र मलिन हो गया, नृत्य संगीत वाद्यकी रूचि का पूर्ण नाम निर्देश सहित 'मालविकाग्निमित्रम्' में वर्णन मिलता है। नाटक के प्रति सम्मान का संकेत उर्वशी के प्रसंग में प्राप्त होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कालिदास का सौन्दर्य बोध व्यापक है वह मानव और मानवेत प्रकृति के समन्वित फलक पर अवस्थित है।

उपसंहारः

कालिदास का सम्पूर्ण मानवता के कवि है। वस्तुतः भारतीय संस्कृति के उच्चतम आदशों को वाणी प्रदान करनेवाला महाकवि मानव मात्र का ही कवि होसकता है, उसे किन्ही क्षुद्र अथवा संकीर्ण प्राचीरों में बाँधा नहीं जा सकता। जिन आदर्शों को व्यापक जीवन के सन्दर्भ में रखकर कवि ने उपपादित किया है, वे आज भी मूलरूप में अपना महत्व अक्षुण्ण बनाए हुए हैं। वर्तमान युग प्रश्नों का युग बन गया हैं. प्रश्न -परायण एवं

प्रश्राभिभूत बन गया हैं। 'अभिज्ञानशाकुन्तल' में जीवन के पुरुषार्थों में जो मंगलमय संतुलन तथा सामञ्जस्य स्थापित किया गया है, वह पृथ्वी के स्वर्ग के धर्मो से विभूषित बनने का संदेश हैं -

"एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयो-
रैध्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे शाकुन्तलं सेव्यताम् ।। "

- (गेटे)

वस्तुतः कालिदास की सबसे बड़ी शक्ति एवं उपलब्धि यही है कि उन्होंने जीवन के लिए एक मुनिश्चित योजना की कल्पना की हैं जिसमें मनुष्य के यावत् अभीप्सितार्थों की सिद्धि की सम्यक् व्यवस्था हैं, किन्तु जिसमें प्रेयस के लिए श्रेयस की अवमानना नहीं की गई हैं, सुन्दरं के लिए शिवं की कदर्थना नहीं की गई हैं। युग-युग का मानव मूलतः उसी संघर्ष से उलझता हैं और मंगल-मार्ग का वरण कर ही अपने विकास की यात्रा में अग्रसर होता हैं। वस्तुतः लौकिक साधनाओं में प्रथमिकता का यही क्रम अंगीकार कर सभी काल का मनुष्य विश्व-कल्याण की यह कामना करता आया हैं।-

"सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यन्नु ।
सर्वः कामनावाप्रोनु सर्वः सर्वत्र नन्दतु ।। "

- (विक्रमो. ५-२५)

कालिदास ने प्रेम और सौन्दर्य की जो स्रोतस्विनी अपनी रचनाओं में प्रवाहित की हैं, वह युग-युग में मनुष्य को मनोमुग्ध करती रहेगी। वे सिद्ध-सारस्वत कवि हैं।

वाङमधु का आध्योपान्त परिस्त्रवण करानेवाला 'नारिकेलपाक' उनके काव्य की प्रधान विभूति हैं। कुछ कवियों की रचनायें उनके घर की चार दिवारों के भीतर ही विचरण करती हैं, कुछ कवियों की रचनायें मित्रों के भवनों तक पहुँच जाती है, और कुछ कवि ऐसे होते हैं जिनकी रचनायें सभी के मुखों पर पदन्यास करती हुई, विश्व- भ्रमण की अभिलाषा पूर्ण करती हैं -

'एकस्य तिष्ठति कवेगृह एक-काव्य-
मनस्य गच्छति सुहृद्भवनानि यावत् ।
न्यस्याविदग्धवदनेषु पदानि शश्वत्
कस्याऽपि संचरति विश्वकुतुहलीव ।।'

-(राजशेखर) ९.

कालिदास का काव्य विश्वकुतुहली हैं। इसी कारण, वे युग-युग के कवि है। समग्र मानवता के मनोमय कोष के मधुर एवं मनस्वी गायक हैं।

IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 7.301

Volume 3, Issue 2, February 2023

सन्दर्भ-सूची

[1]. 'न स योगो न तत् कर्म नाट्यस्मिन् यत्र दृश्यते । सर्व शाखाणि शिल्पानि कर्माणि विविधानि च ।। ना.शा.१/१९४

[2]. * अवस्थानुकृतिनर्नाट्यम् दशरुषकम् पृष्ठ - ४

[3]. *रुपश्यतीच्यते दशरूपकम् पृष्ठ ४

[4]. Sundara, mf (i)n (perhaps for sunaras sundaraja being intserted as in gk. Avops for avnp) beatiuful, handsome, lovely, charming, agreeable(dictionary by sir monier williams at the darendon press, page-1227 Sanskrit

[5]. सुन्द- savtra root, meaning of shine, to bright, vop (Sanskrit English dictionary p. 1227

[6]. क्षोभ केनचिदिन्दु- प्रतिद्वन्दिभिः । अभिज्ञान शाकु. ४/५ पृ. १२४.

[7]. जैसे चार हाथ, पांच मुख, तीन नेत्र, नील वर्ण आदि।

[8]. उपमा कालिदासस्य, भारवेरर्थगौरवम् दण्डिनः पदलालित्यमं माघे सन्तिस्त्रयो गुणाः।

[9]. जैसे दुर्वासा के शाप तथा अंगुठी की कथा से पौराणिक दुष्यन्त का चरित्र धुलकर बिलकुल ऊँचा उठ जाता है ।

[10]. रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान् । पर्यत्सु की भवति यत् सुखतापि जन्तुः ।। विक्रमार्वशीयम् प्रथम अंक श्लोक ११ (अ.शा. ५/२१)

[11]. त्वया विना सोऽपि समुत्सु को भवेत् । सखी जनस्ते किमुताद्र सौहृदः ।। (विक्रमो. प्र.१ श्लोक. ११)

[12]. इयमदिक मनोज्ञा, वल्केनापितन्वी, किमिवहिमधुराणां मंडनम्, नाकृतीनाम ।। (आ.शा. ९/९७)

[13]. आस्था और सौन्दर्य, 'डॉ. राम विलास शर्मा' पृ.७९.

[14]. मालविकाग्निमित्रम् - २/३ पृ.७१

[15]. शकुन्तलस्य विदायावसरे तस्याः मित्राणि तां बाधन्ते, विवाहसमये मालविका अपि मित्रैः बाध्यन्ते, ते तां बाधन्ते।

[16]. महाकवि कालिदास रमाशंकर तिवारी, पृ.१९३.

[17]. अभि.शाकु. द्वितीय अंक, लोक.४ पृ.५४

[18]. शाकुन्तलम्, प्रथम अंक (कालिदास ग्रंथावली, पृ.१७)

[19]. * शाकुन्तलम् षष्ठौड़क ।।४।। नास्ति सदेहः महा प्रभावो राजर्षिः। (कालिदास ग्रंथावली पृ- १०४)

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

[20]. कुमारसंभवम् एकादश सर्ग ।।१७।।

[21]. मालविकाग्निमित्रम् १/१६

[22]. मालविकाग्निमित्रम् २/६

[23]. द्रष्टव्य ऋतुसंहार' तृतीय सर्ग लोक. १०. पृ.४३८

[24]. अभ°शकु°। द्वितीय अदक, श्लोक

[25]. यथाकस्यापि पिण्ड खजुरेढेजितस्य तिन्तिण्याभिलाषो भवेत् तथा स्त्रीरत्न परिभाविनो भक्त इयमभ्यर्थना ।। शाकु.२ पृ.६०